सूकर पालन — एक संभावित व्यवसाय

डॉ मनोज कुमार
पशुचिकित्सा सूक्ष्मजीव विज्ञान विभाग
बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय, पटना

परिचय

सूकर पालन सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से पिछड़े एवं गरीबों के आजीविका का पारम्परिक साधन है। मुख्य रूप से यह किसानों द्वारा छोटे पैमाने पर आय बढ़ाने और सामाजिक-सांस्कृतिक दायित्वों को पूरा करने के लिए किया जाता है। ।

छोटे और मध्यम आकार के विभिन्न पशु; अर्थात, मुर्गी, भेड़ तथा बकरी की तुलना में सूकर एक सुयोग्य और लाभदायक पशु है। आहार को मांस में रूपांतरित करने में यह ब्रायलर के बाद दूसरे स्थान पर आता है। मांस उत्पादन के अतिरिक्त इसे कड़े बाल एवं खाद उत्पादन के लिए उपयोगी होता है।

कई पहलुओं में सूकर एक आदर्श पशु है। इनका तेजी से शारीरिक विकास एवं परिपक्वता और खाद्य पदार्थों का मांस में रूपांतरण करने की निहित दक्षता, अद्वितीय प्रजनन क्षमता, विनम्र स्वभाव एवं निर्वाह के लिए सीमित स्थान की आवश्यकता जैसे गुणों के कारण सूकर पालन को प्राथमिकता दी जाती है। उपर्युक्त पहलू न केवल आय में बढ़ोतरी करते हैं, बल्कि भविष्य में मांस की बढ़ती मांग को पूरा करने में सहायक होंगे।

सूकर पालन का महत्व

सूकर पालन बहुत ही आकर्षक व्यवसाय है एवं इसके कई लाभ हैं। परिणाम के रूप में कई किसान इस व्यवसाय में निवेश कर रहे हैं। लोग आमतौर पर मांस एवं उत्पादों से आय करने के उद्देश्य से इस व्यावसाय को अपना रहे हैं। सूकर अपने मांस के लिए भोजन का एक अच्छा स्रोत हैं और इनसे दुनिया भर में लाभ उठाए जा रहे हैं।

1. बेरोजगार एवं शिक्षित युवाओं की उद्यमिता बढ़ाने और रोजगार के अवसर पैदा करने में सूकरपालन महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है । महिलाएं और छात्र भी अपने दैनिक गतिविधियों के साथ-साथ इस व्यवसाय को सफलतापूर्वक कर सकते हैं।
2. सूकरपालन महिलाओं के सशक्तिकरण में सकारात्मक योगदान दे सकता है। यह महिलाओं को आय अर्जित करने अवसर देता है और आर्थिक सुरक्षा एवं स्वालम्बन प्रदान कर सकता है। कम पूंजी निवेश एवं सहज प्रबंधन के कारण महिलाएं इसे अंशकालिक व्यवसाय के रूप में अपना सकती है।

3. पर्यावरण संरक्षण और स्वास्थ संबंधी उद्देश्य के लिए इन दिनों जैविक खेती पर जोर दिया जा रहा है । जैविक उत्पादों का मूल्य बाजार में तुलनात्मक रूप से अधिक होता है। अतः जैविक-विधि से सूकरपालन कर अच्छा मुनाफा लिया जा सकता है।
4. लगभग सभी बैंक इस प्रकार के उद्यम को प्रोत्साहित करने के लिए ऋण स्वीकृत करते हैं। अतः अगर आप व्यावसायिक रूप से इस व्यवसाय शुरू करना चाहते हैं, तो आप ऋण के लिए अपने स्थानीय बैंकों को आवेदन दे सकते हैं।
5. सूकरपालन, किसी अन्य पशुओं विपरीत, कम निवेश एवं जोखिम और मुनाफे देने वाला व्यवसाय है । इसे मँझोले, सीमांत और अथवा भूमिहीन किसान छोटे पैमाने पर शुरू कर अपनी आजीविका सुधार सकते हैं। ।
6. इनका प्रजनन कम पीढ़ी-अंतराल का होता है। एक मादा सुकर 8-9 महीने कि उम्र में प्रजनन के योग्य हो जाती है और एक साक में दो बार बच्चे दे सकती है। प्रत्येक बार वह 6-12 बच्चे दे सकती है। जन्म के समय ये लगभग 1.1 कि.ग्रा. वजन के होते हैं और किसी भी अन्य पशुधन के विपरीत, जीवन के पहले सप्ताह में अपना वजन दोगुना कर सकते हैं।पीढ़ियों के बीच कम अंतराल के कारण उत्पादकता को बढ़ाकर निवेश से लाभप्रदता में तेजी लायी जा सकती है।
7. इसके बच्चे दो से तीन महीने की उम्र में माँस के लिए तैयार हो जाते हैं , जिन्हें बेचकर पुरे वर्ष में एक निरंतर आय का श्रोत बनाया जा सकता है।
8. सूकर की ड्रेसिंग लगभग 65-80 प्रतिशत होती है जबकि अन्य मांस उत्पादन वाले पशुओं में यह 65 प्रति शत से ज्यादा नहीं होती।
9. सूकर के मांस (पोर्क) का उच्च पोषण का महत्व है। सभी खाद्य मांस में, पोर्क उच्च वसा युक्त एवं अधिक पौष्टिक अधिक उर्जा देता है। यह थायमिन, नियासिन और राइबोफ्लेविन जैसे विटामिन से समृद्ध होता है।
10. पारंपरिक मांस के अलावा, कई अन्य सुकर उत्पादों का उपयोग खाद्य व्यंजनों में किया जाता है। इनमें सुअर का वसा, मस्तिष्क, पैर, कान, रक्त और अंग (उदाहरण के लिए, यकृत) शामिल हैं। आम तौर पर सुअर के -उत्पादों का उपयोग कई और विभिन्न उद्देश्यों के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए, आंतों का उपयोग सॉसेज केसिंग के लिए , हड्डी और कोलेजन का खाद्य प्रसंस्करण एवं कॉस्मेटिक उद्योग में किया जाता है और बालों को ब्रश आदि के लिए उपयोग किया जाता है।सूकर का वसा मुर्गिओं के आहार , साबुन, पेंट एवं अन्य रासायनिक उद्योगों द्वारा किया जाता है।
11. कच्चे मांस का प्रसंस्करण कर, बेकन, हैम, लॉर्ड, पोर्क, सॉसेज आदि का उत्पादन एवं निर्यात किया जा सकता है।
12. सूकर पालन हेतु न्यूनतम स्थान और उपकरण की आवश्यकता होती है, अतः इन्हें घर के पिछवाड़े में भी पालन किया जा सकता है।

13. सूकर में उच्चतर खाद्य रूपांतरण की दक्षता होती है; जिससे यह अन्य मांस उत्पादक पशुओं की अपेक्षा में कम आहार सेवन कर अधिक मांस उत्पादन करते हैं।
14. सूकर सर्वाहारी होते हैं और कुछ भी खा सकते हैं अर्थात, अनाज, क्षतिग्रस्त भोजन, चारा, फल, सब्जियां, कचरा, गन्ना आदि सहित लगभग सभी प्रकार के जैविक पदार्थ खा सकते हैं। इस तरह वे मानव के लिए अनुपयोगी पदार्थों को हमारे लिए मांस के रूप में एक पौष्टिक आहार का उपलब्ध कराते हैं।
15. सूकर एवं मछलीपालन के एकीकृत फार्मिंग से केवल आर्थिक लाभ ही नहीं होते, बल्कि अपशिष्ट तथा रसोई के अवशेष और जलीय पौधों को सुअर के भोजन के रूप में उपयोग किया जाता है। बदले में इनसे उत्सर्जित मलमूत्र को मछली के तालाबों में जैविक खाद के रूप में उपयोग किया जाता है। सूकर के गोबर जैविक सामग्री से भरपूर होते हैं, जिसे खेतों और मछलियों के तालाबों के उर्वरक के रूप में मूल्यवान माना जाता है। इन्हीं गुणों से सूकर पर्यावरण संरक्षण के लिए भी हितकारी है।

सुकर उद्यम योजना पर विचार के लिए मुख्य क्षेत्र

सूकरपालन की शुरुआत से पहले इसकी विस्तृत योजना पर विचार करना आवश्यक होता है। व्यवसाय शुरू करने के लिए व्यवसाय योजना की तैयार करनी चाहिए। व्यावसायिक योजना में , व्यावसायिक उद्देश्य, बाजार विश्लेषण, विपणन योजना, प्रबंधन और परिचालन योजना और वित्तीय योजना शामिल होनी चाहिए। व्यवसाय योजना में अलग-अलग घटकों पर विचार कर निवेश करें।

- बाजार और उत्पादों की मांग
- सुअर की नस्ल का चयन
- सुअर उत्पादन की प्रणाली
- आवास और संबंधित उपकरण
- फ़ीड और फ़ीड स्रोतों तथा उन तक पहुंच
- जल स्रोत और स्थानीय स्तर पर उपलब्ध मात्रा
- स्वास्थ्य देखभाल और पशु चिकित्सा सहायता
- ऋण एवं इसके श्रोत तक पहुंच
- प्रशिक्षण
- लागत और अन्य प्रासंगिक खर्च की विस्तृत जानकारी

*** प्रशिक्षण एवं तकनीकी जानकारी के लिए प्रसार शिक्षा निदेशालय, बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना से संपर्क करें।**